8 प्रार्थना और प्रयास की सफलता

(कहानी)

शेर का नाम सुनते ही कँपकँपी-सी होने लगती है और उसका भयानक चेहरा आँखों के सामने आ जाता है। शेर अकसर जंगलों और कछारों में रहता है। कभी-कभी वह उन जंगलों के पास गाँवों में भी आ जाता है और आदमी और जानवरों को उठा ले जाता है। कभी-कभी उन जानवरों को मार कर खा जाता है, जो जंगलों में चरने जाया करते हैं।

एक बार एक गडरिये का लड़का गाय-बैलों को लेकर जंगल में गया और उन्हें जंगल में छोड़कर वह एक झरने के किनारे मछलियों को पकड़ने में लग गया। जब शाम होने को आई, तो उसने अपने जानवरों को इकट्ठा किया, मगर एक गाय गायब थी। उसने इधर-उधर दौड़-धूप की, मगर उस गाय का पता न चला। बेचारा बहुत घबराया। मालिक मुझे जीता न छोड़ेंगे। इस वक्त ढूँढने का मौका न था, क्योंकि जानवर इधर-उधर चले जाते। वह उन्हें साथ लेकर घर लौटा और उन्हें बाड़े में बाँधकर किसी से बिना कुछ कहे गाय की तलाश में निकल पड़ा। उस छोटे-से लड़के की यह हिम्मत तो देखो! अँधेरा हो रहा है, चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ है, जंगल भाँय-भाँय कर रहा है, गीदड़ का हौवाना सुनाई दे रहा है, पर वह *बेखौफ* जंगल में आगे बढ़ा जा रहा था।

कुछ देर तक तो वह गाय को ढूँढता रहा, लेकिन जब अँधेरा हो गया, तो उसे डर लगने लगा। जंगल में तो अच्छे-अच्छे आदमी डर जाते हैं, फिर उस छोटे-से बच्चे की क्या बात!

मगर जाए कहाँ? जब उसे कुछ न सूझा तो वह एक पेड़ पर चढ़ गया और उसी पर रात काटने की ठान ली। उसने पक्का इरादा कर लिया था कि बगैर गाय को लिए घर न लौटूँगा। दिन भर का थका माँदा तो था ही। अतः उसे जल्दी ही नींद आ गई। नींद चारपाई और बिछावन नहीं ढूँढती।

अचानक पेड़ इतनी जोर से हिलने लगा कि उसकी नींद खुल गई। गिरते-गिरते बच गया। सोचने लगा, पेड़ कौन हिला रहा है? आँखें मलकर नीचे की तरफ देखा तो उसके रोएँ खड़े हो गए। एक शेर पेड़ के नीचे खड़ा उसकी तरफ ललचाई हुई आँखों से ताक रहा था। उसकी जान सूख गई। वह दोनों हाथों से डाल को पकड़कर उससे चिपक गया। अब उसकी नींद भाग गई।

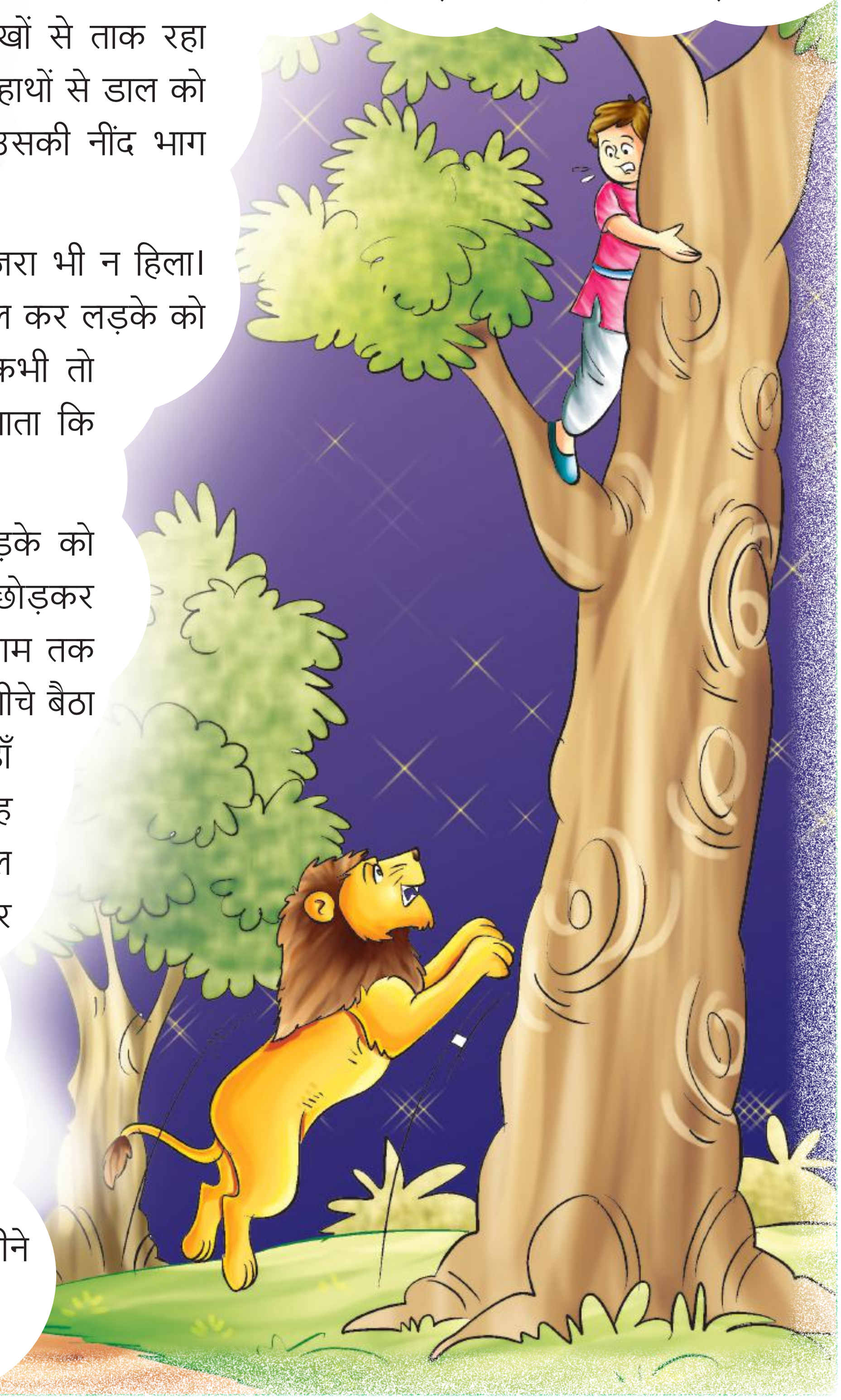

कई घंटे बीत गए, पर शेर वहाँ से जरा भी न हिला। वह बार-बार गुर्राता और उछल-उछल कर लड़के को पकड़ने की कोशिश करता। कभी-कभी तो वह लड़के के इतने नजदीक आ जाता कि लड़का जोर से चिल्ला उठता।

रात ज्यों-त्यों कटी, सवेरा हुआ। लड़के को कुछ भरोसा हुआ कि शायद शेर उसे छोड़कर चला जाए। मगर शेर ने हिलने का नाम तक न लिया। सारा दिन वह उसी पेड़ के नीचे बैठा रहा। शिकार सामने देखकर वह कहाँ जाता? पेड़ पर बैठे-बैठे लड़के की देह अकड़ गई थी, भूख के मारे बुरा हाल था, मगर शेर था कि वहाँ से ज्वार भर भी न हटता था।

उस जगह से थोड़ी ही दूर एक झरना था। शेर कभी-कभी उस तरफ ताकने लगता था। लड़के ने सोचा कि शेर प्यासा है। उसे कुछ आस बँधी कि ज्यों ही वह पानी पीने जाएगा, मैं भी यहाँ से खिसक लूँगा। आखिर शेर उधर चला। लड़का पेड़

पर से उतरने की फिक्र कर ही रहा था कि शेर पानी पीकर लौट आया। शायद उसने भी लड़के की मंशा समझ ली थी। वह आते ही इतनी जोर से गुर्राया और ऐसा उछला कि लड़के के हाथ-पाँव ढीले पड़ गए मानो वह नीचे गिरा जा रहा हो। अब उसे मालूम होता था जैसे हाथ-पाँव पेट में घुसे जा रहे हों। ज्यों-त्यों करके वह दिन भी बीत गया। ज्यों-ज्यों रात होती जाती थी, शेर की भूख भी तेज होती जाती थी। शायद उसे यह सोच-सोचकर गुस्सा आ रहा था कि खाने की चीज सामने रखी है और मैं दो दिन से भूखा बैठा हूँ। क्या आज भी एकादशी रहेगी? वह रात भी उसे *ताकते* ही बीत गई।

तीसरा दिन भी निकल आया। मारे भूख के उसकी आँखों में तितलियाँ-सी उड़ने लगीं। डाल पर बैठना भी मुश्किल हो गया था। कभी-कभी तो उसके जी में आता कि शेर मुझे पकड़ ले और खा जाए। उसने हाथ जोड़कर ईश्वर से विनती की, "भगवान, क्या तुम मुझ गरीब पर दया न करोगे?"

शेर को भी थकावट मालूम हो रही थी। बैठे-बैठे उसका जी ऊब गया था। वह चाहता था कि अब किसी तरह जल्दी से शिकार मिल जाए। लड़के ने इधर-उधर बहुत निगाह दौड़ाई कि कोई नजर आ जाए, मगर कोई नजर न आया। तब वह चिल्लाकर रोने लगा। मगर वहाँ उसका रोना कौन सुनता?

आखिर उसे एक *तदबीर* सूझी। वह पेड़ की फुनगी पर चढ़ गया और अपनी धोती खोलकर हवा में उड़ाने लगा कि शायद किसी शिकारी की नजर पड़ जाए। एकाएक वह खुशी से उछल पड़ा। उसकी सारी भूख,

सारी कमजोरी गायब हो गई। कई आदमी झरने के पास खड़े उस उड़ती हुई झंडी को देख रहे थे। शायद उन्हें अचंभा हो रहा था कि जंगल में पेड़ पर झंडी कहाँ से आई। लड़के ने उन आदमियों को गिना— एक, दो, तीन, चार।

जिस पेड़ पर लड़का बैठा था, वहाँ की जमीन कुछ नीचे थी। उसे ख्याल आया कि अगर वे लोग मुझे देख भी लें तो उनको यह कैसे मालूम होगा कि उसके नीचे तीन दिन का भूखा शेर बैठा हुआ है। अगर मैं उन्हें होशियार न कर दूँ तो यह दुष्ट किसी-न-किसी को जरूर चट कर जाएगा। यह सोचकर वह पूरी ताकत लगाकर जोर-जोर से चिल्लाने लगा। उसकी आवाज सुनते ही वे लोग रुक गए और अपनी-अपनी बंदूकें सँभालकर उसको ताकने लगे।

लड़के ने चिल्लाकर कहा, "होशियार रहो! होशियार रहो! इस पेड़ के नीचे एक शेर बैठा हुआ है।"

शेर का नाम सुनते ही वे लोग सँभल गए। *चटपट* बंदूकों में गोलियाँ भरीं और चौकन्ने होकर आगे बढ़ने लगे।

शेर को क्या खबर कि नीचे क्या हो रहा है। वह तो अपने शिकार की ताक में घात लगाए बैठा था। एकाएक पैरों की आहट पाते ही वह चौंक उठा और उन चारों आदमियों को एक टीले की आड़ में देखा। फिर क्या कहना था! उसे मुँहमाँगी मुराद मिली। भूख में सब्र कहाँ? वह इतने जोर से गरजा कि सारा जंगल हिल गया और उन आदमियों की तरफ छलाँग लगाई। वे लोग तो पहले से ही तैयार थे। चारों ने एक साथ गोलियाँ चलाईं। ठाँय! ठाँय! ठाँय! ठाँय! आवाज हुई। चिड़ियाँ पेड़ों से उड़-उड़कर भागने लगीं। लड़के ने नीचे देखा, शेर जमीन पर गिर पड़ा था। वह एक बार फिर उछला लेकिन गिर पड़ा। फिर वह हिला तक नहीं।

लड़के की खुशी का क्या पूछना! भूख-प्यास का नाम तक न था। चटपट पेड़ से उतरा तो देखा सामने मालिक खड़ा है। वह रोता हुआ उसके पैरों पर गिर पड़ा। मालिक ने उसे उठाकर छाती से लगा लिया और बोला, "क्या तू तीन दिन से इसी पेड़ पर था?"

लड़के ने कहा, "हाँ, उतरता कैसे? शेर जो नीचे बैठा था।"

मालिक, "हमने तो समझा था कि किसी शेर ने तुझे मार कर खा लिया होगा। हम चारों आदमी तुम्हें तीन दिन से ढूँढ रहे हैं। तूने हमसे कहा तक नहीं और निकल खड़ा हुआ।"

लड़का, "मैं डरता था, गाय जो खोई थी।"

मालिक "अरे पागल, गाय तो उसी दिन आप-ही-आप चली आई थी।"

भूख-प्यास से शक्ति तक न रहने पर भी लड़का हँस पड़ा।

—मुंशी प्रेमचंद

शब्द-अर्थ

बेखौफ — निडर *(fearless)*, ताकत — शक्ति *(power)*,
तदबीर — युक्ति *(idea, effort)*, चटपट — तुरंत *(at once)*।

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए–

कछारों	इकट्ठा	बगैर	बिछावन	गुर्राता	एकादशी
मुश्किल	अचंभा	बेखौफ	मुँहमाँगी	कँपकँपी	भाँय-भाँय

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) गडरिया गाय-भैंसों को लेकर कहाँ गया था?

(ख) शेर किसकी ताक में घात लगाए बैठा था?

(ग) प्रस्तुत पाठ में लेखक ने हमें क्या शिक्षा दी है?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) शेर का नाम सुनते ही आने लगती है–

☐ हँसी ☐ कँपकँपी ☐ नींद

(ख) गाय-बैलों को जंगल में छोड़कर गडरिया लग गया–

☐ बंसी बजाने ☐ मछलियाँ पकड़ने ☐ कपड़े धोने

(ग) अँधेरे से डरकर गडरिया–

☐ पेड़ पर चढ़ गया ☐ रोने लगा ☐ भाग गया

(घ) संकट से उबरने के लिए गडरिये ने–

☐ केवल प्रार्थना की

☐ प्रयास किया

☐ प्रार्थना और प्रयास दोनों किए

2. वाक्यों को पूरा कीजिए–

झंडी, बंदूक, जंगल

(क) .... में प्रायः कुछ लोग डर जाते हैं।

(ख) लड़के ने धोती का .... के रूप में प्रयोग किया।

(ग) शेर .... से मारा गया।

3. सही वाक्यों के सामने (✓) तथा गलत के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) गडरिये की तीन गायें खो गईं थीं। ☐

(ख) जंगल में कोई नहीं डरता। ☐

(ग) पेड़ के हिलने से उसकी नींद खुल गई। ☐

(घ) मालिक ने लड़के पर बहुत गुस्सा किया। ☐

(ङ) लड़का गाय के खोने से डर गया था। ☐

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) लड़के ने किस बात का पक्का इरादा कर लिया था?

(ख) पेड़ पर बैठ-बैठे लड़के की क्या हालत हो रही थी?

(ग) लड़के के मिल जाने पर मालिक ने क्या किया?

(घ) क्या बात सुनकर लड़के को हँसी आ गई?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) रोएँ खड़े होना अर्थ – ....

वाक्य ....

....

(ख) जान सूखना अर्थ – ....

वाक्य ....

....

(ग) छाती से लगा लेना अर्थ – ....

वाक्य ....

....

(घ) हाथ-पाँव ढीले पड़ना अर्थ – ....

वाक्य ....

....

2. 'बे' उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाइए–

(क) खौफ — .... (ख) रौनक — ....

(ग) शर्म — .... (घ) गैरत — ....

(ङ) वजह — ....

3. सुमेल कीजिए–

खण्ड 'अ'	खण्ड 'ब'
(क) बंदूक	(i) साँय-साँय
(ख) हवा	(ii) भाँय-भाँय
(ग) बूँदें	(iii) टप-टप
(घ) सन्नाटा	(iv) ठाँय-ठाँय

क्रियात्मक गतिविधि

- कहानी के आधार पर बालक की विशेषताएँ बताइए।
- पाँच हिंसक पशु और पाँच अहिंसक पशुओं के नाम लिखिए–

(क) .... (क) ....

(ख) .... (ख) ....

(ग) .... (ग) ....

(घ) .... (घ) ....

(ङ) .... (ङ) ....

- कोई 'साहसिक कथा' सुनाइए।
- दिए गए स्थान पर एक हिंसक और एक अहिंसक पशु का चित्र बनाइए तथा उनके नाम भी लिखिए–

....